जल

28 सितंबर 2019

:

,

"सातवाँ महाद्वीप हमारे भीतर है, हमारे रक्त में, हमारे मस्तिष्क में। हम एक टूटे और अन्यायपूर्ण तंत्र के भीतर रहते हुए उसी तंत्र को बदलने का प्रयत्न कर रहे हैं। और हम बिल्कुल नहीं जानते कि क्या करेंगे।"

- : , - , -,-,- — ,

कार्यक्रम का पहला सार्वजनिक मलिन जल के लिए है, जल के बहने के अधिकार के लिए। तीन वर्षों से कार्यक्रम की बंद सभाओं में सञ्चित विचार अब सार्वजनिक स्थल में बहते हैं — बिएनाले के ढाँचे में, परन्तु बिएनाले से छलकते हुए। मैराथन-प्रारूप में: शोधकर्ता, कार्यकर्ता, कलाकार, संगीतज्ञ क्रमशः मञ्च पर आएँगे, प्रत्येक प्रस्तुति लगभग बीस मिनट तक चलेगी, बीच में मञ्च-परिवर्तन होगा।

: -

— - : , , , ? , , ? ? ? ,

: , 27 30 - - — - — , , - — - , – - 1880 - , —

"नगर जल के हर स्थान तक हाथ बढ़ाता है। जिस स्थान पर हाथ रखता है उसके जल को सुखा देता है। फिर और दूर हाथ बढ़ाता है।"

: -

- : — - , - ; , -

- , - — " " — , , , , – — HES- — " " - - ;

: , - - , , , " " : " , "

"काश चिंका ने पूरे काला-सागर को आशीर्वाद दिया होता। तेरा वंश कभी न उगे, कोई आ न सके।"

:

— - - - : , , , - , " ," " — "

- - - — — - , , - - — — , , , - , , - -

"टेप को फिर शुरू से चलाते हैं। प्लास्टिक हमने फेंका। प्लास्टिक हमारे पास लौट आया। प्रसंस्कृत हुआ, बदला, रूपान्तरित हुआ। नमक के भीतर, मसल्ज़ में, सीप में, मछली में, हर चीज़ में।"

: , ,

चौथा स्वर एक इंजीनियर-कलाकार का है — इंजीनियरिंग-प्रशिक्षण ने जो विश्लेषणात्मक दृष्टि दी है, दृश्य-कला ने जो प्रेक्षक-दूरी दी है, उनसे इस्तानबुल को सामग्री-प्रवाहों के माध्यम से पढ़ते हैं: पत्थर की खदानें, निर्माण-मलबा, कंक्रीट। गाज़ी-मोहल्ले के पीछे पत्थर की खदानें उत्तरोत्तर बढ़ रही हैं। पुराने लिग्नाइट-भण्डार मलबे से भर दिए गए हैं, उनके ऊपर तीसरा हवाई-अड्डा बनाया गया है — नगर के समस्त मलबे का संग्रहण-स्थल, "विप्लवात्मक" आधार। : पुराने हाल्काली कूड़ा-स्थल पर रचा गया बन्द आवास, क्युचुक
चेकमेजे-झील से अनधिकृत खींचे जल से पोषित कृत्रिम नहर। ग्रोटेस्क का सबसे सरल रूप।

पर इंजीनियर-कलाकार केवल निदान नहीं करते, एक विधि भी सुझाते हैं: चलना। चलने की क्रिया मानवता-इतिहास की सबसे मूल गतियों में से एक है — गांधी की यात्राओं से 68 के पेरिस-विद्रोह तक, "" सामूहिक से लीकिया-पथ तक। कनाल इस्तानबुल के मार्ग को एक
पैदल-यात्रा-पथ में बदलने का प्रस्ताव रखते हैं: लोग जो भी होने जा रहा है, अच्छा या बुरा, अपनी देह से अनुभव करें। सुरक्षा-बाँधों की चर्चा भी इसी ढाँचे में आती है: गैप-बाँध, अमेरिका-मेक्सिको दीवार, इज़राइल-फ़लस्तीन, तुर्की-सीरिया सीमा — जल को एक सुरक्षा-उपकरण में, एक सैन्यवाद की वस्तु में बदला जा रहा है।

> "क्या सुरक्षा-बाँधों से जल की सीमा-दीवार बनायी जा रही है? ये बाँध किसकी सुरक्षा साधते हैं? जल को उसके समस्त जीवन-सन्दर्भों से तोड़कर क्या एक सैन्यवादी उपकरण में बदला जा रहा है?"

:

मैराथन भर में दो प्रदर्शन भी मञ्च लेते हैं — एक समूह जल-अनुष्ठान करता है, अपनी देह और स्वरों को जल से मिलाते हुए; एक संगीतज्ञ पौधों की जड़ों के जल से सम्पर्क को विद्युत्-संकेतों में, फिर ध्वनि में, बदलता है। ये लिखित प्रतिलेख में नहीं उतरते पर कार्यक्रम की आत्मा रचते हैं: जल केवल विश्लेषण की वस्तु नहीं, अनुभव की, सुनी जाने की, स्पर्श की वस्तु है। शोध और प्रदर्शन का साथ-साथ खड़ा होना
की विधि है: ज्ञान केवल आँकड़े से नहीं आता, देह से भी आता है।

समापन में एक युवा स्वर ऊपर उठता है, अँग्रेज़ी में: " ,
2018. ' ." सभागार पर उतरती चुप्पी एक उत्तर की भाँति है। आगामी
सप्ताह पेट्रोल-सभा है — पेट्रोल-अर्थव्यवस्था, जलवायु-संकट, संग्रहालय-प्रदर्शन। का सार्वजनिक मैराथन आरंभ हो चुका है, जल पहली वस्तु के रूप में सबसे मूर्त और सबसे राजनीतिक रूप में सामने आया है: जिसका बहने का अधिकार छीना गया है हर वह नदी, कंक्रीट-नाली में बन्दी हर वह जल-मार्ग, सूक्ष्म-प्लास्टिक से भरा हर वह समुद्र, सैन्यवाद की वस्तु में बदला हर वह बाँध — सब एक ही तंत्र के विभिन्न मुख हैं। जल के बहने का अधिकार वास्तव में जीवन के बहने का अधिकार है।